RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-01
January-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# गया जिला का जलप्रवाह एवं प्रमुख नदियाँ

डॉ0 अजय कुमार

सहायक शिक्षक

**जल–प्रवाह (अपवाह–तंत्र)**
**(DRAINAGE SYSTEM)**

जल–प्रवाह या अपवाह के अन्तर्गत किसी भी क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों का अध्ययन किया गया हैं। नदियों के बहने की दिशा एवं प्रतिरूप (Pattern) को अपवाह तंत्र कहा जाता है। जिला का अपवाह–तंत्र को न सिर्फ याहँ कि धरातलीय स्वरूप और संरचना बल्कि यहाँ कि जलवायु भी प्रभावित करती है। अपरदन और निक्षेपन के शक्तिशाली दूत के रूप में जिला की नदियों ने इसकी आकृति को एक नया रूप प्रदान कर मानव के लिए आकर्षक बनाया है। यह क्षेत्र की सभ्यता, संस्कृति और आर्थिक विकास में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ये सिंचाई के महत्त्वपूर्ण साधन है। बाढ़ कर समय जलोढ़ मिट्टी फैलाकर समतल और उपजाऊ मैदान का निर्माण करती है। ये यातायात, मतस्य (fishing) प्राप्ति एवं जल–विद्युत उत्पादन के मुख्य साधन है। नदी तट पर औद्योगिक केन्द्रों एवं नगरों का विका हुआ है। गया नगर फल्गु के तट पर बसा है।

"Phalgu (River Phalgu go Gaya), Sone (the celebrated Sone joining the Ganga near Patna) and Punepuna (modern Punpun, a tributary of the Gaya) are the sacred rivers of Magadha."

गया जिला की सभी नदियाँ दक्षिणी उच्चप्रदेश, छोटानागपुर के पठारी भाग से निकलती है तथा दक्षिण से उत्तर लगभग सामान्तर प्रवाहित होती है। चूँकि इस क्षेत्र की वर्षा मौसमी है, अतः नदियाँ स्थायी (Perennial) नहीं है तथा शुष्क एवं शीत ऋतुओं में सूख जाती है। इस जिले की प्रमुख नदियों में फल्गु, मोरहर, पैमार, आदि का नाम आता है। सभी नदियाँ दक्षिण से उत्तर गंगा नदी की ओर प्रवाहित होती हैं। वर्षा काल में ये नदियाँ इतनी भरी तथा भयंकर हो जाती है कि अपने साथ बहुत बड़ी मात्रा मे महीन बालू तथा कंकड़ बहाकर नीचली घाटी में जमा कर देती हैं। इनकी तली इस प्रकार ऊँवची हो गई है तथा वे बाढ़ ग्रसित हो जाती है, पर वर्तमान में अधिकांश बाढ़ के जेल को छोटे–छोटे पइन (Pains) तथा आहर में बहा (Divert) दिया जाता है जिसका उपयोग सिंचाई में की जाती है। नदियों का एकाएक ऊपर–नीचे होना इनकी खास विशेषता है। पर 2010 में वर्षाकाल में भी वर्षाभाव के कारण ये नदियाँ सूखी हैं।[10]

गया जिला की प्रमुख नदियाँ हैं–

फल्गु: यह नदी बोधगया से 3 कि0मी0 दक्षिण हजारीबाग के पठार से नीलाजन तथा मोहाने नदियों के मिलने से निर्मित हुयी है। यह गया शहर के बीच प्रवाहित होती है जिसकी चौड़ाई 300 मीटर तक है। इसका पश्चिमी तट ऊँची और पथरीला है। जहाँ कई पक्के घाट बने हुए हैं। इसके उच्चतम जल–तल से उपर विष्णुपद मंदिर स्थित है जो हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थल है। पितृपक्ष में देश के विभिन्न कोने से लाखों तीर्थ यात्री आते हैं और फल्गु में स्नान करके पिण्ड दान करते हैं। यह एक बरसाती नदी है। शुष्क मौसम में इसमें पानी के बदल बालू रहता है। आस–पास के लोग व धोबी लोग (कपड़ा साफ करने के लिए बालू को हटाकर )(या खोदकर) उसमें गढ़े बनाते हैं जिसमें पानी चारों ओर रिसकर, भर जाता है और उसमें लोग स्नान करते हैं और कपड़ा धोते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह नदी अन्तः सलीला (subterranean channel) है। उत्तर की ओर जाने पर यह नदी कई शाखाओं (धाराओं) में बंट जाती है। जैसेः– सोन, कतार, मैथन, छोवा, महतवाइन आदि।

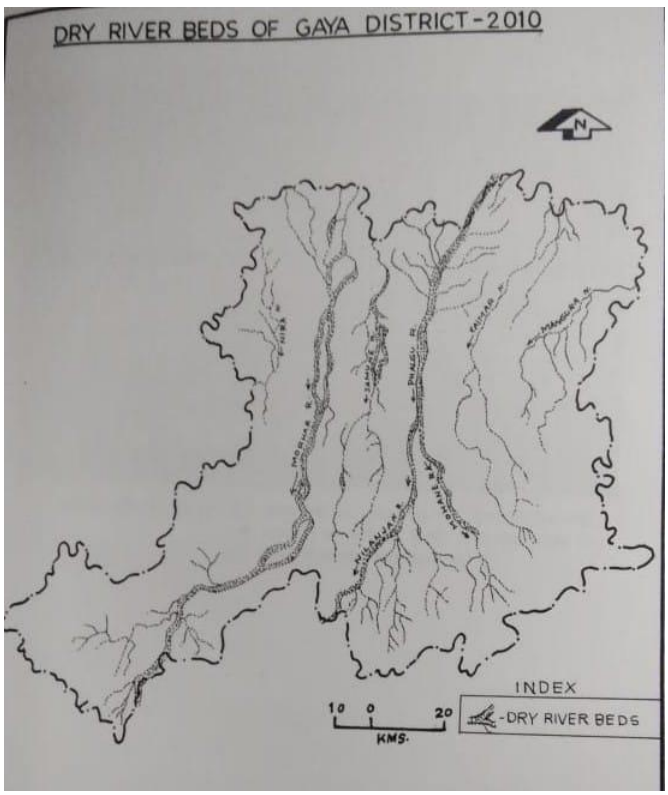


**जलाशय (गया शहर के):–**गया नगर में भूमि उपयोग नक्शे को देखने से अनेक तालाबों या जलाशयों को पर्यवेक्षण किया जात सकता है। यहाँ चार बड़े तालाबों को देखा जा

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सकता है– (क) दिग्गी या रबीन्द्र सरोवर, (ख) रामसागर तालाब, (ग) विसार तालाब (घ) वैतरनी तालाब। इन्हें कभी–कभी ''सागर'' (Sagars) भी कहा जाता है। लेकिन पिछले अस्सी वर्षों में ऐसे तालाबों की संख्या में कमी आयी है। जो क्षेत्र वर्तमान में आजाद पार्क का है, वह भी कभी अनेक 'सागरों' में से एक था, पर अ बवह, बसाव के लगातार बढ़ने तथा भूमि की कीमत अत्यधिक होने से, गढे को कुड़े–कचरे से भर कर सुन्दर पार्क बना दिया गया है। यह घटना आबादी के कुछ वर्षों बाद की है। पर वर्तमान में इस पार्क के चारों ओर मकानों व दुकानों द्वारा अतिक्रमण (Encroachment) होता जा रहा हैं।[11]

इन तालाबों के अतिरिक्त पुराने गया के क्षेत्र में अनेंक छोटे–बड़े तालाब देखने को मिलते हैं जैसे– सूर्यकुण्ड, राधाकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड। इनमें सूर्यकण्ड जो विष्णुपद मंदिर के निकट स्थित है, बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन सागरों (तालाबों या कुण्डों) के निर्माण का वास्तविक कारण यह है कि गया नगर भारत का एक अतिगर्म शहरों में एक है। एक समय यह सबसे गर्म शहर माना जाता था। तथा गृष्मकाल में गर्मी बहुत ही असहनिय हो जाती थी। गृष्म की गर्मी (ताप) कमाने के लिये गया–नगरवासियों ने अनेक तालाबों को बनवाकर राहत महशूश करते रहे हैं, क्योंकि इन सागरों की हवा (Water breeze) भूमि की हवा (Land breeze) से अरामदायक होती है।

## फल्गु नदी एवं इसका पर्यावरण

वैदिक काल से गयाजी और फल्गु के बीच का संबंध बना है। फल्गु के तट पर गयाजी और प्रतिदिन का सूर्योदय के वक्त, पितरों को तर्पण यहां की पहचान है। फल्गु सूखी हो या जल से तालाब। तर्पण का कर्मकांड दोनो हाल में होता आया है। गया जी का जिक्र जहां भी होता है, तो फल्गु उससे अलग नही। लेकिन यह फल्गु जो पितरों को मोछ देते आयी है अब खुद मुक्ति की अकुलाहट लेकर जी रही है। इसे अपनों (गयावासियों) ने ही प्रदूषित कर रखा है। वैसे में इसका हाल निर्जिव रूप से अविरल बहने के अलावा अब कुछ नहीं रहा। अपने गोद में गया की पूरी गंदगी को समेटकर अंतः सलिला के रूप में बह रही है।

**छेद डाला दिल कोः–**8 लाख की आबादी वाले इस शहर को पेयजल की आपूर्ति अंतः सलिला फल्गु ही करती है। शहर के दक्षिण दंडीबाग में जलापूर्ति उद्हन केन्द्र बना है। दर्जनों बोरिंग यहां किये गये हैं। इतनी ही नहीं नदी के किनारे रिहायशी मकान वालों ने अपने–अपने क्षेत्र बोरिंग करा रखा है। पंचायती अखाड़ा के पास तो दर्जनों मोटे–मोटे पाइप नदी में ऐसे नजर आते हैं जैसे नदी के पेट में अब पानी नहीं बचा। भूगर्भशास्त्री भी इस बात के कायल हैं कि फल्गु के पेटे में पानी काफी है। लेकिन इतने छिद्र हो गये हैं कि वह भी कम पड़ता दिखाता है। एक अनमान के मुताबिक जब भी पेयजल संकट का हो हल्ला शुरू होता है तो फल्गु के दिल में एक छेद और कर दिया जाता है। फिर भी आया प्यासा है।

**नाले में गिरता शहर का पानीः–**अंतः सलिला फल्गु नदी के पवित्र जल से तर्पण देने का कर्मकांड एक आस्था के तहत किया जाता है। लेकिन इस आस्था को उस वक्त ठेस लगती है जब शहर के बड़े–बड़े नलों का मुंह इस पवित्र नदी को प्रदूषित करने में जुटी है। यह काम आज से नहीं वर्षों से हो रहा ह। शासन–प्रशासन किसी का भी रहा तो शहर के गंदे जल को सिवरेज के तहत साफ कर नदी में गिराने का कोई योजना नहीं बनायी गयी। नतीजा नगर निगम या प्रशासन ने नालों का मुंह सीधे फल्गु में खोल डाला और प्रतिदिन लाखों गैलन प्रदूषित जल इस पवित्र नदी अपवित्र करने में गिरता है।

**खामियाजा भुगतता शहरः–** प्रदूषित जल के फल्गु में गिरने से नदी जहां अपवित्र हो रही है। वहीं इसका खामियाजा भी लोग ही भुगत रहे हैं। नदी किनारे बसने वाले शहरवासी इससे ज्यादा प्रभावित हैं। उनके प्राइवेट बोरिंग में भी गंदे पानी का प्रभाव दिखता है। अगर उदाहरण लें तो पिता महेश्वर के पास बोरिंग से निकले वाला जल इतना प्रदूषित है। कि पानी से कपड़ा धोने पर भी वह पीला हो जाता है। विष्णुपद इलाके में तो जलापूर्ति के पाइप से बाल निकालने की शिकायत बहुत परेशानी हो चुकी है। इसके अतिरिक्त शहर के बीचोबीच जलापूर्ति पाइप से ही कीड़े–मकोड़े और कचरा भी निकलता है।

**कूड़े का बना घरः–**चूंकि शहर के कूड़े को डमप करने के लिएकोई निर्धारित स्थान निगम द्वारा तय नहीं किया गया। वैसे में निगम के ट्रैकटर वाहकों को सुरक्षित स्थान नदी का तट ही नजर आता है। विष्णुपद के दक्षिण–पूर्वी क्षेत्र के नद तट पर कूड़ों का अंबार लगा है। प्रशासन इसे रोज देखता है। यही हाल मानपुर पुल और पंचायती अखाड़ा से लेकर आगे तक का है। इसे पूरी तरह प्रशासन के द्वारा नदी को प्रदूषित करना कहा जायेगा।

**रोज जलती लाशेंः–**फल्गु नदी के तट पर विष्णुपद श्मशान घाट पर प्रतिदिन दर्जनों लाशें जलती हैं। इन लाशों का राख फल्गु में प्रवाहित कर दिया जाता है। या फिर फेंक दिया जाता है। इतना ही नहीं 9 माह तक सूखी रहने वाली इस नदीं में प्रतिदिन कई लाशें जलायी जाती हैं। चूंकि श्मशान घाट का जो क्षेत्र हें वह काफी सीमित है। वैसे में लाश को जलाने के लिए भीड़ नदी में उतर जाती हैं जहां जले लकड़ी और गंदी चीजें नदी में ही पड़ी रहती है।

**सिकुड़ती जा रही है नदीः–**लंबे–चौड़े पाट वाली फल्गु नदी बरसात के दिनों में काफी भयावह दिखती है। जब इसके दोनों छोर पर पानी लबालब रहता है। तो इसकी भयवहता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है। कि प्रतिवर्ष कई जानें इसमें बह जाती हैं। लेकिन अतिक्रमण का शिकार यह पूरी तरह हो रही है। 'बोधगया से लेकर गया शहर के पंचायती आखाड़ा तक नदी के दोनों किनारों पर

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

व्यक्तिगत लाभ लेकर लोग इसके पाट को छोटा करने में जुटे हैं। जो आने वाले दिनों के लिए अच्छे संकेत नहीं है।

**और अंत में नद को प्रणामः–**इतना सब कुछ होने के बाद भी गयाजी का फल्गु नदी पूरे देश–विदेश के हिन्दू संस्कृति में पूजनीय माना गया है। यहां प्रति वर्ष आने वाले लाखों तीर्थयात्री इसके जल से अपने पितरों को तृप्त करते हैं। इतना ही नहीं कई पुराणों में तो कहा भी गया है कि पुत्र अगर फल्गु के जल में अपना अंगुठा भी रख देता है तो उसके पितर तृप्त हो जाते हैं। मोक्षदायिनी फल्गु को प्रणाम।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. Ahmad, Enayat, Bihar-A Physical Economic and Regional Geography, 1965, Ranchi, University.
2. Khanna, K.K. and Gupta, V.K., Economic and Commercial Geography, 1974, Delhi, Sultan Chand and Sons.
3. गौतम, अलका, संसाधन एवं पर्यावरण, 2005 इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
4. Chandana, R.C., Geography of Population, 2005, New Delhi, Kalyani Publishers.
5. Nanavati, M.B., The Indian Society of Agricultural Economics, 1957, Bombay.
6. नेगी पी0एस0, पारिस्थितिकीय विकास एवं पर्यावरण भूगोल, 2006, आगरा, रस्तौगी पाब्लिकेशन्स।
7. Freeman, T.W., Geography and Planning, 1968, London, Hutchinson University Press.
8. भारती, राधाकान्त, बिहार का भूगोल 1911, पटना, हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
9. Bhattacharya, S.N., Rural Industrialization in India. 1980. Publishing Corporation
10. भरूचा, इराक, पर्यावरण अध्ययन, 2006, नई दिल्ली, आरियेंट लौंगमैन।
11. Mamoria, C.B., Geography of India-Agricultural Geography, Vol. Agra, Shivlal Agrawal Company.
12. Miller, A.A., The Skin of the Earth, 1966, London Mathun and Co.
13. मौर्य, एस0डी0, जनसंख्या भूगोल, 2005, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भण्डार।
14. राव, बी0पी0 और श्रीवास्तव, बी0के0 पर्यावरण और परिस्थितिकी, 2007. गौरखपुर, बसुन्धरा प्रकाशन।
15. सिंह, साविन्द्र पर्यावरण भूगोल, 1986, गोरखपुर, बसुन्धरा प्रकाशन।

**पत्रिका, सामाचार पत्र इत्यादि।**

16. Singh, Savindra and Singh, Sweta, Environmental Geography. 2007, Allahabad, Prayag Pustak Bhawan.
17. हीरालाल, जनसंख्या भूगोल, 1986, गोरखपुर, बसुन्धरा प्रकाशन।
18. कुमार, प्रभंजन, कंक्रीट ने लील ली हरियाली, दैनिक जागरण, 29, जून, 2010.
19. ..... बारिश के साथ बीमारियों की दस्तक, दैनिक जागरण 26, अगस्त, 2010.
20. कुमार, पंकज, गयावासियों को नही मिल सका प्रदूषित पेयजल से मुक्ति, दैनिक जागरण, 4,5,2009.
21. Qadirl, Abdul, Fluoride Poisonous Villagers Suffer From bone, teeth, deformity, an extract, The Times of India (TOD), a daily newspaper, Patna, 4.11. 2010.
22. Kunt, Abhay, A Survival Strategy for Bihar, and extract, The Hindustan Times (HT), a daily newspaper, Patna, 21.09.1998.


© RRIJM 2015, All Rights Reserved 